राज
कामिक्स
विशेषांक
मूल्य 16.00 संख्या 116
ध्रुव-शक्ति
एक पोस्टर मुफ्त
शक्ति पर्व
1998

कहते हैं, ऐसा मानते भी हैं, और अक्सर देखा भी गया है कि सच और झूठ, पुण्य और पाप या धर्म और अधर्म के बीच जब-जब टकराव हुआ है तब-तब सच, पुण्य और धर्म की ही विजय हुई है–
लेकिन जिस लड़ाई में दोनों तरफ सत्य ही मौजूद हो, उस लड़ाई का नतीजा क्या निकलेगा?
तुम नताशा की मदद करके भारी भूल कर रही हो शक्ति! तुम न्याय करने के चक्कर में गलत इन्सान पर अपनी शक्तियों का प्रयोग कर रही हो!
शक्ति, नारी की रक्षक और नारी के सम्मान की संरक्षक है! और नारी पर हाथ उठाने की जुर्रत करने वाला कभी सत्य और धर्म का पक्षधर नहीं हो सकता!... तुझे शक्ति का दंड तो भुगतना ही होगा!
दोनों प्रतीक हैं सत्य के। दोनों प्रतीक हैं न्याय के। और दोनों को एक ही चीज पसन्द है... विजय! इसीलिए आज एक दूसरे के आमने-सामने खड़े हैं...
ध्रुव-शक्ति
कथा: जॉली सिन्हा
चित्र: अनुपम सिन्हा
इंकिंग: विट्ठल, विनोद,
सुलेख व रंग: सुनील पाण्डेय
सम्पादक: मनीष गुप्ता

बंधी मुट्ठी लाख की, और खुली तो फिर खाक की! धरती की खुली मुट्ठी को इन्सान घुल-घुलकर खाक में तब्दील करता जा रहा है। लेकिन समुद्र की बन्द मुट्ठी में लाख नहीं, करोड़ नहीं, अरब नहीं, बल्कि खरबों की दौलत छिपी हुई है। समुद्र के अन्दर पनपते मोती और मूंगों के अलावा सदियों से लगातार डूबते जहाजों में बेशुमार दौलत और पुरातत्व संबंधी बेशुमार खजाने भी इसकी लहरों के परदे में छिपे हुए हैं। इस दौलत को निकालने में न तो कोई समस्या है, और न ही जोखिम-
न... या शायद होता है-
हमारा इस 18वीं सदी में राजनगर के तट के पास डूबे इस पुर्तगाली जहाज को ढूंढने और इसके खजाने को निकालने का काम तो काफी गोपनीय था! फिर इन कोस्ट गार्ड्स को खबर कैसे हो गई?
तुम्हारी मूर्खता से! मैंने कहा था कि अपनी बोट को समुद्र में इस जगह रोककर रखने के बजाय इधर-उधर घुमाते रहो। पर तुम नहीं माने। समुद्र के बीच में खड़ी बोट को देखकर किसी को भी शक हो सकता है।
फिर ये तो कोस्ट गार्ड्स हैं!
इनका काम ही शक करना है!
खैर! हम इसके लिए भी तैयार होकर आए हैं। तुम जल्दी से जल्दी जो समेट सकते हो, समेटो। फिलहाल हम यहां से निकलते हैं। बेस से परमीशन लेकर दुबारा वापस आ जाएंगे!
निशाना साधने की जरूरत नहीं थी। गन से निकले हारपून के आगे 'टाइमर एक्सप्लोसिव' फिट था-
एक ही धमाके से दोनों गार्ड्स की पसलियां उनके फेफड़ों में पैवस्त हो गईं-

ओह! ये तो हम पर गोलियों की बौछार कर रहे हैं।
ऐसे तो कोई न कोई गोली हमको लग ही जाएगी! अपने आखिरी एक्सप्लोसिव का इस्तेमाल करना ही पड़ेगा।
एक्सप्लोसिव हुआ-
और आशा के ही अनुरूप कोई भी कोस्ट
पीछा करने की स्थिति में नहीं रहा-
अब कोई हमारा पीछा नहीं कर सकता! फिलहाल किसी गाड़ी पर कब्जा करके यहां से निकलो।
उसके बाद नेता तक पहुंचने का तरीका ढूंढते रहेंगे।
दोनों यह सोच भी नहीं सकते थे-
कि उनके सर पर मंडराती चिड़िया-
उनके लिए खतरे का कारण बन सकती है-
कुछ ही देर में चिड़िया ने राजनगर के रक्षक को ढूंढ लिया था-
ओह! समझ गया! चलकर मुझे बताओ कि कहां पर हैं वे दुष्ट इंसान?
ध्रुव एक बड़े अपराध को रोकने के लिए रवाना हो रहा था-

और इसी वक्त- राजनगर के एक हॉल में काफी चहल-पहल थी-
यार, यह 'अखिल भारतीय अस्पताल सम्मेलन' का आइडिया जिसने भी सोचा है, उसकी खोपड़ी खोलकर उसके दिमाग को चूम लेना चाहिए!
जानकारी और ज्ञान बढ़ने के साथ-साथ थोड़ा सा दिल भी बढ़ जाता है। और... हाय... आँखों की सिंकाई भी हो जाती है।
ALL INDIA HOSPITAL
सुधर जा सरूप! डॉक्टरी पढ़कर कॉस्मेटिक सर्जन बन गया है, तो थोड़ा सोबर भी हो जा। वरना किसी दिन इतनी पिटाई होगी कि खुद सर्जरी करवानी पड़ेगी।
वैसे भी माहौल का तो ख्याल कर। हम इस सम्मेलन के मेजबान हैं। भारत के लगभग हर बड़े शहर से हॉस्पीटल टीमें यहां पर आई हैं।
उन पर हमारा क्या इम्प्रेशन पड़ेगा?
तुझे इम्प्रेशन की पड़ी है लेकिन, और यहां सीने के पिंजरे में बंद दिल का पंछी धड़-धड़ कर रहा है कि कैसे इस पिंजरे से निकलकर कहीं जाकर अपना घोंसला बना ले!
वाऊ! वो हसीना कौन है, सोनू?
वहां पर रिसेप्शनिस्ट है। और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि ये विधवा है, और इसे पुरुषों से सख्त नफरत है।
अरे, तुझे क्या हो गया? तू एकदम से सीरियस क्यों हो गया?
इसको देखकर मुझे उसकी याद आ रही है, जिसे मैं कभी भूला ही नहीं।
इसका नाम तुझे पता है सोनू?
ये हसीना तेरा पसीना निकाल देगी। दिल्ली से आई है...
'न्यू दिल्ली इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज' की टीम के साथ।
हां! इसका नाम चंदा है। सर-नेम का पता नहीं। क्योंकि अब ये अपने पति के नाम का इस्तेमाल नहीं करती।
चंदा!
यानी... यानी ये वही है, वही है! बरसों की भटकन आज खत्म हो गई।

इस सब घटनाक्रम से बेखबर चंदा अपनी ही समस्या के बारे में सोच रही थी-
इस भीड़भाड़ से जल्दी ही निकल लेना चाहिए। वरना अगर कहीं किसी मुसीबतज़दा स्त्री की कहीं से चीख सुनाई पड़ गई तो मैं शक्ति को चंदा के रूप पर हावी होने से नहीं रोक पाऊंगी।
और इतने सारे लोगों के आगे मेरा भेद खुल जाएगा।
चंदा!
मुझे कौन आवाज़ दे रहा है?
त... तरु... कौन हैं आप? क्या चाहते हैं?
क्या कह रही हो चंदा? मुझे पहचाना नहीं! मैं तरुण हूं। इयर एस.डी.बी.एस का तुम्हारा क्लासमेट!
मैंने तुमको कहां-कहां नहीं ढूंढा चंदा! पर तुम्हारा कहीं पता नहीं चला! फिर पता चला कि तुम्हारे घरवालों ने ज़बरदस्ती तुम्हारी शादी...
ओह! मैं और आगे नहीं सुन सकती!...
...से मिस्टर! कान खोलकर सुन लो! मुझे पुरुषों से नफ़रत है! और उन पुरुषों से सख्त नफ़रत है जो लड़कियों से ख्वाह-म-ख्वाह की जान-पहचान निकालने की कोशिश करते हैं!
थूऊ, गेट लॉस्ट! और अगर मेरा पीछा करने की कोशिश की तो याद रखना, मुसीबत में पड़ जाओगे!
मुझे यहां से दूर जाना ही होगा! तरुण ने एकाएक सामने आकर मेरे दिमाग में तूफान उठा दिया है!
?
पुरानी यादें मेरी याददाश्त को झकझोर रही हैं! ओफ! यह क्या हो गया!

ओह! ये जा रहे हैं स्नेक-लाइन का प्रयोग करके मैं जल्दी नीचे नहीं पहुंच पाऊंगा, क्योंकि ढलान मुझे झूलने की जगह नहीं देगी। लटक-लटक कर उतरना पड़ेगा। कोई और रास्ता सोचना होगा, इन तक जल्दी पहुंचने के लिए...

अगले ही पल- स्टार लाईन हवा में लहराई। और स्टार का नुकीला सिरा एक आलू में आ धंसा-
ए... यह क्या कर रहा है? आलू से क्या करेगा?
पता नहीं। लेकिन मुझे इतना जरूर मालूम है कि ये खतरनाक लड़का आलू से भी बम का काम ले सकता है।...
...गाड़ी लहराकर इसको गिराने की कोशिश करो।
गाड़ी सड़क पर खतरनाक तरीके से लहराने लगी। और ध्रुव उस पर अपना संतुलन बनाने का प्रयास करने लगा-
अपने ख्यालों में लड़ाई कर रही चंदा, सोच में इतनी गहरी डूब चुकी थी कि उसे यह भी होश ना था कि वह कहां चल रही है-
वह सड़क के बीचों-बीच चल रही थी-
तरुण एकाएक मेरे सामने क्यों आ गया? किस्मत ने मुझे दुख के अलावा कुछ नहीं दिया। काश! सात साल पहले मैंने हिम्मत की होती तो...
...तो वह नहीं होता, जो हुआ था।...
चंदा ओ चंदा ऽऽऽऽऽ किसने चुराई ऽऽ तेरी मेरी निंदिया रे ऽऽऽऽ
अरे, पीछे तो देखो।
GIRLS HOSTEL

निकलती गाड़ी एक झटके से

पर अभी तो आप कह
रही थी कि आप स्क-

आ सकते हैं इसलिए

कर देगा!

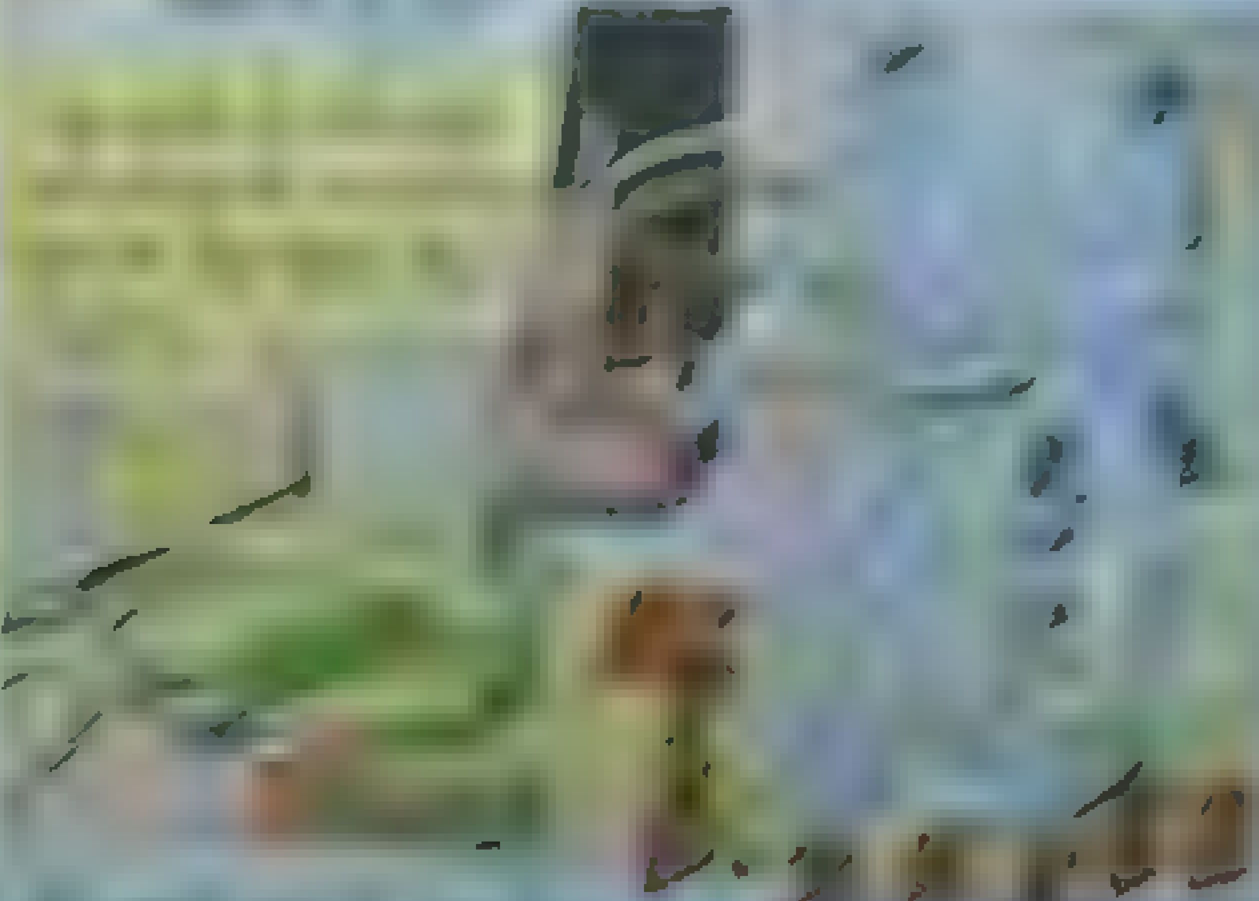

और अगर इस नतीजे को कोई पलट सकता था तो सिर्फ एक शख्स-
जो इस वक्त समुद्र की गहराइयों की खाक छान रहा था-
'प्रचंडा' को एक बार कैद किया जा चुका है, जादूगर विकारियों द्वारा! लेकिन नताशा के पास जो 'चर्म डायरी' थी, उसमें वे पन्ने नहीं थे, जिनमें शायद इस बात का जिक्र हो कि विकारियों ने प्रचंडा को कैद कैसे किया था! ...
— और अगर वह 'चर्म डायरी' यहीं से तैरती हुई सागर की सतह तक गई है तो वे बाकी पन्ने भी यहीं कहीं होने चाहिए—
— आहा, ये रहे! उनके सिकुड़ जाने के कारण पहचान में नहीं आ रहे थे।
ध्रुव जोड़-जोड़कर स्पेनिश भाषा में लिखी गई उन वृत्तांत को पढ़ता गया! और धीरे-धीरे उसके दिमाग में स्थिति साफ होती चली गई—
आहा! समझ गया! अब अगर शक्ति मेरा साथ दे तो नताशा को भी बचाया जा सकता है, और 'प्रचंडा' को कैद भी किया जा सकता है!
पर इस समय ध्रुव को शक्ति की नहीं, बल्कि शक्ति को ध्रुव की जरूरत थी—

क्योंकि शक्ति, प्रचंडा के सामने धीरे-धीरे कमजोर पड़ती जा रही थी–
आह! अगर यह परछाई जबरन शरीर में निवास न कर रहा होता तो मैं अपनी 'हस्त-ऊर्जा' से इसको कब का गला चुकी होती।...
...पर अब ये मुझे... ओह।
शक्ति! इससे हार मत मानो! इसको दबोचने की कोशिश करो!
ध्रुव को वापस घटनास्थल पर देखकर शक्ति समझ गई कि इस बार वह बगैर किसी योजना के नहीं आया है–
उसने अपनी शक्ति बटोरकर प्रचंडा को एक मजबूत शिकंजे में जकड़ लिया–
और उसी पल ध्रुव ने कुबी शिर के मलबे से लाए 'कोन' को नताशा के शरीर से सटाकर–
उसकी तीन घुंडियों को बाहर खींच लिया–
और जैसे सिकुड़ी 'फोम' फैलने पर पानी सोख लेती है, वैसे ही कोन ने ऊर्जा रूपी प्रचंडा को खींचकर जज्ब करना शुरू कर दिया–
किर्र्र्र

कुछ ही पलों बाद, पराक्री प्रचंडा फिर से कोन में कैद था। और नताशा मुक्त हो गई थी—
आऽह! मुझे क्या हुआ था, ध्रुव? मैं... मैं नैबुला के अन्दर से यहां कैसे आ गई?
...वैसे अब मेरी बाकी शक्तियां भी वापस आकर मुझसे मिल गई हैं। अब मैं वापस नहीं आऊंगी! लेकिन तुमसे मैंने यह जरूर सीखा है कि परिस्थिति समझने के बाद ही न्याय करना चाहिए!
अभी बताता हूं, नताशा। लेकिन पहले इस प्रचंडा को पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति के पार पहुंचाना है! वर्ना यह फिर न जाने कौन सी मुसीबत खड़ी कर दे!
लेकिन इसको गुरुत्वाकर्षण शक्ति के पार पहुंचाओगे कैसे?
मैं श्री हरिकोटा स्पेस लांचिंग सेंटर से संपर्क स्थापित करता हूं! अगर निकट भविष्य में कोई रॉकेट अंतरिक्ष में भेजा जा रहा हो तो उसके साथ इसे भी भेजा जा सकता है!
इसकी आवश्यकता नहीं है ध्रुव! मैं इसको अंतरिक्ष में छोड़ आऊंगी। लेकिन जाने से पहले मैं यह जरूर कहना चाहती हूं कि मैंने तुमको गलत समझा!...
यह आश्चर्यजनक शक्तियों युक्त महिला कौन है ध्रुव? इसके मुख पर तो देवियों जैसा तेज है!
यह अपने आपको देवी का अंश ही बताती है, नताशा! और मुझे इसके दावे पर कोई सन्देह नहीं है।

और अब मैं उम्मीद करती हूं कि तुम मुझे गिरफ्तार करोगे!
गिरफ्तार? पर क्यों? तुमने फिलहाल कोई अपराध नहीं किया! लेकिन मैं अब भी चाहता हूं कि तुम अपराध का रास्ता छोड़कर वापस इस दुनिया में आ जाओ!
उधर प्रकाश की गति से उड़ती हुई चंडा ने अंतरिक्ष में पहुंच कर 'कोव' को नष्ट कर दिया, और चंडा आज़ाद हो गई
फिलहाल यह संभव नहीं है ध्रुव! पहले मैं धन, कपट और हथियार से युक्त इस समाज को रहने लायक बनाऊंगी!...
...और फिर ही तुम्हारी दुनिया में वापस आ सकूंगी!
अब मुझे भी शीघ्रातिशीघ्र वापस जाना चाहिए!...
...क्योंकि तरूण को चंडा पर शक नहीं होना चाहिए!
खैर, छोड़ो! अगर तुम मुझे कुछ बताना नहीं चाहती, तो मैं पूछूंगा नहीं...
...लेकिन यह याद रखो कि एक न एक दिन मैं यह बात जानकर ही रहूंगा कि तुमको अपना कौन सा रहस्य छिपाने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है!
बहुत समय लगाया तुमने वापस आने में चंदा!
जी... जी... मैं तरूण... मुझे...
फिलहाल तो चलो! तुम्हारे 'प्लास्टिक सर्जरी' के ऑपरेशन की तैयारी करनी है!